Snehal Sindhu

Monthly Bulletin for Divine Message of Spiritual Relationship, Friendship and Love

Vol. 010 Issue 01 Jan 2024 Pages 20 A.S. Rs 100

Wishing you all a Happy, Healthy, Prosperous and Blissful New Year 2024

सत्संग समाचार

✻ सन् २०२३ की अंतिम भजन संध्या गुरुवार, दि. ७ दिसंबर को गुरुहरि काकाजी महाराज की स्मृति में 'आप रीझो तेम राजी' विषय पर भक्तिभाव से मनाई गई। साथ ही प.पू. दिनकरभाई, पू. किशोरभाई मास्टर्स और पू. अेन्जीबहन तथा पवई के संतभाईयों, संतबहनों का स्वागत ठाणे के Celebration Hall में ढोल-नगारे के साथ हुआ।

Bhajan Sandhya at Thane

इस उपलक्ष्य में बालमंडल के प.भ. मिहिरभाई भट्टने स्वामिनारायण भगवान की वेशभूषा धारण कर सभी संतभाईयों, संतबहनों तथा हरिभक्तों का विशिष्टरुप से स्वागत किया।

इस अवसर पर शिकागो के प.भ. शंकरभाई पटेलने 'रुडा रहेजो रे रंगीला...' भजन प्रस्तुत करके गुरुहरि काकाजी की विशिष्ट स्मृति की।

प.पू. वशीभाई ने कहा कि स्वामिनारायण भगवान पृथ्वी पर विचरते थे तब छोटे छोटे भक्तोंने उन्हें ऐसा राजी किया कि महाराजने राजीपा में अक्षरधाम दे दिया। भगवानने करसौटी भी बहुत की थी। वैसे शास्त्रीजी महाराज से लेकर गुरुहरि काकाजी महाराज तक सभीने बहुत सहन किया। भगवान को राजी करने का एक ही सरल उपाय है कि उनके आगे दो हाथ जोडकर उनकी मर्जी के मुताबिक जीवन जीना है। भगवान से बात करने के लिये अंतर से प्रार्थना करनी पडती है। हम कथावार्ता सुनते है तो उसमें ऐसे डूबे कि आध्यात्मिकता में आगे बढे। पू. मीनाबहन के पिताजी प.भ. प्रेमजीभाईने सत्संग यहाँ ठाणे में बहुत बढाया। पू. आरतीबहन के पिताजी भी प.भ. भगवानदासभाई बारोट काकाजी की सेवा में रहते थे। इन दोनों

Snehal Sindhu Jan2024-V04 (kajal).indd 2 29-01-2024 18:23:27

Bhajan Sandhya at Thane

भक्तों की सेवा से हमें इन संतबहनों की भेट मिली। भगवान राजी होते है तो भेट में हमें ऐसा आशीर्वाद देते है कि हमें किसीका अभाव आ नहीं सकता। ऐसे गुणातीत स्वरुपों का अंतर का राजीपा हम सहज में प्राप्त कर ले वही प्रार्थना।

प.पू. भरतभाई ने आशीष देते हुए कहा कि हमारे साथ जो भी प्रसंग बनते है उसमें हमारी परीक्षा होती है कि उस समय हम कितनी धीरज रखते है। २०२४ की पहली भजन संध्या चीखली में रखी है।

वहाँ के भक्तों का भी भाव बहुत है। वही भाव आज यहाँ ठाणे मंडल के भक्तों में दिखाई पडता है। तो हम कितना भी बडा Project करेंगे गुरुहरि काकाजी वह जरुर पूरा करेंगे। केवल हमारा इरादा अच्छा होना चाहिए। भगवान की शक्ति से सब हो रहा है। हम कितने भी होंशियार हो लेकिन भगवान के प्रति हमारी भक्ति और भावना ही काम आती है। हम जहाँ भी रहे वहाँ संप-सुहृदभाव-एकता से रहेंगे उतना भगवान सामने से हमारा काम करेंगे। काकाजीने लिखकर दिया है कि आप जितने संप-सुहृदभाव-एकता से जीवन जीयोगे तो देवता आकर आपका काम करेंगे। हमें हमारी मानीनता छोडनी है। प.पू. महंतस्वामीजीने संप पर बहुत अच्छा लिखा है। **S - सहन करना।** किसीभी कार्य में सहन करके क्षमा करेंगे तो अंतर में शांति मिलेगी और बडे सत्पुरुष जीव से राजी होंगे। Let Go करो। संप-सुहृदभाव से कार्य करेंगे तो हमारे Project में दिव्यता आयेगी। **A - अनुकूल होना।** दूसरों को सहायरुप बनना चाहिए।

Bhajan Sandhya at Thane

Snehal Sindhu Jan2024-V04 (kajal).indd 3 29-01-2024 18:23:37

Bhajan Sandhya at Thane

ये सब हमें करना है। सामनेवाला मुझे अनुकूल हो ऐसा नहीं, हमें सभीको सहायरुप होना है। **M - मनपसंद छोडो।** वह छोडेंगे तो संप सहज ही रहेगा। **P - परस्पर एकदूसरे को मददरुप होना।**

आज से यह हमें शुरु करना है। हररोज रात को सकारात्मक प्रार्थना करना। साथ ही सुबह में वैसी प्रार्थना करेंगे तो ८ घंटे का भजन हो जायेगा। हम ईमानदारी के साथ यह करेंगे तो अगली भजन संध्या में हमें कुछ परिवर्तन जरुर दिखाई देगा। तो हम विचार-वाणी-वर्तन से काकाजी का नाम रोशन करें वही प्रार्थना।

प.पू. दिनकरभाई ने आशीष देते हुए कहा कि ऐसी भजन संध्या हमारे जीवन का एक हिस्सा बन गया है। पवई मंदिर में कितने सालों से जयुबहन और अन्य साथीओं भजन का कार्य करते है। सन् १९८६ में गुरुहरि काकाजीने देहलीला संकेली तब जाने से पहले सभीको संकेत दिया था, लेकिन वह ईशारा कोई समझ नहीं पाया था। वह आज समझमें आ रहा है। हम जो भजन संध्या कर रहे है उसके लिये अनुपम मिशन के वरिष्ठ संत प.पू. अश्विनभाई को धन्यवाद देते है। काकाजी ७ मार्च, १९८६ को स्वधाम पधारे तब उसी महिने में संतभगवंत साहेबजी का प्रागट्यदिन आता है इसलिये उन्होंने साहेबजी से प्रार्थना की कि हम ७ को काकाजी की और २३ को योगीजी महाराज की स्मृति में तथा आपके प्रागट्यदिन निमित्त भजन संध्या करें। तो वह १९८६ से शुरु हुई और सभी केन्द्रो में भजन संध्या सहज ही शुरु हो गई। **वह गंगोत्री में**

Snehal Sindhu Jan2024-V04 (kajal).indd 4 29-01-2024 18:23:46

से गंगासागर बन गया। यह भजन संध्या हमारा सच्चा खजाना है। यह भजन सुनते है तो अंतर में आनंद आता है। वह आनंद परमानंद बन जायेगा और वही हमारी जीवनशैली बन जायेगी। तो हम दिल से सेवा में जुडे रहे। अगर सेवा न कर पाये तो सत्संग में आयेंगे तो वह भी सेवा ही है। कथावार्ता केवल सुने ही नहीं लेकिन उसप्रकार जीवन जीये। काकाजी कहते थे कि आप मेरी बात केवल सुनो मत, सोचो भी मत लेकिन उससे भी आगे जीवन में उतारो। हमारे घर में माता-पिता को प्रणाम करें उससे भी फायदा होगा। हम बडे सत्पुरुष के पास फरियाद लेकर ही जाते है। तो ऐसा न करके Opportunity लेकर जाना चाहिए। तो खुदके दोष देखकर हम जहाँ है वहाँ से आगे बढे और होठ-दिल हमेशा हँसते रखें वही प्रार्थना।

इस अवसर पर सभीने प.भ. नागरदासभाई कोठारी की स्मृति की तथा अन्य सक्रिय कार्यकरोंने और अन्य हरिभक्तोंने दिनकरभाई और अन्य संतभाईयों, संतबहनो के आशीर्वाद लिये। ठाणे मंडल तथा युवकोंने और सभी उत्साही हरिभक्तोंने भोजन और अन्य व्यवस्था अच्छे से की थी। करीब ३०० हरिभक्तोंने इस भजन संध्या का पूर्ण लाभ लिया। ठाणे मंडल की ओर से पवई मंदिर के Project के लिये विशिष्ट सेवा संतभाईयों को अर्पण हुई।

❊ डोंबिवली में रविवार, दि. १० दिसंबर को प.भ. ज्ञानेश्वरीबहन के नये घर में प.पू. दिनकरभाई, प.पू. भरतभाई, प.पू. वशीभाई, पू. किशोरभाई मास्टर्स और अन्य हरिभक्तों की हाजरी में अच्छी महापूजा हुई। प.भ. निर्मलाबहन वर्मा, प.भ. अनिलभाई वडनेरे और अन्य भक्तोंने पूरी व्यवस्था अच्छे से सँभाली थी।

Mahapooja at Dombivali

❊ गुरुवार, दि. १४ से रविवार, दि. २४ दिसंबर तक प.पू. दिनकरभाई, प.पू. भरतभाई और पू. किशोरभाई मास्टर्सने दिल्ली, हैद्राबाद और बेंग्लोर में कईं हरिभक्तों के घर पधरामणी करके सत्संग-भजन का लाभ दिया। दि. १८ को हैद्राबाद की यात्रा में पू. अेन्जीबहन भी उनके साथ जुडी थी।

At Hyderabad

Snehal Sindhu Jan2024-V04 (kajal).indd 5 29-01-2024 18:23:46

At Hyderabad and Bengaluru for Padhramni and Satsang

दि. २१ को बेंगलूरु में डॉ.श्री. श्रीधरजी द्वारा संचालित सेवा निकेतन संस्कृति गुरुकुल में सभी संतभाईयों का विशिष्ट स्वागत हुआ।

दि. २३ को सत्यशीला महाराज के मंदिर में पधारे। वहाँ के स्वामीजीने दिनकरभाई के ८०वे प्रागट्यदिन निमित्त उनको शाल पहनाकर अभिवादन किया।

दि. २४ को कर्नाटक में भाजपा के अध्यक्ष श्री. रामालिंगाप्पा को मिले। उन्होंने दोनों संतभाईयों का शाल के साथ अभिवादन किया।

Snehal Sindhu Jan2024-V04 (kajal).indd 6 29-01-2024 18:23:47

At Bengaluru for Padhramni and Satsang

✻ रविवार, दि. २४ दिसंबर को योगी डिवाईन सोसायटी की ओर से प.पू. वशीभाई और सद्‌भाव फाउन्डेशन की ओर से MESO कंपनी के श्री. शशीकांत शेठ कर्जत जिल्ले के कडाव गाँव में नि:शुल्क Eye Checkup और मोतीबिंदु के इलाज के केम्प में गये और दोनों संस्था की ओर से कई मरीजों को राहत दी।

साथ ही Rotary Club के सहयोग से दोनों संस्थाओंने कर्जत जिल्ले के गाँव में गत एक साल में करीब १६० शौचालय बनाये। उनकी यह सेवाभावना की सभीने बहुत सराहना की और ऐसी सामाजिक सेवा के लिये उन्हें धन्यवाद भी दिया।

At Karjat

Snehal Sindhu Jan2024-V04 (kajal).indd 7 29-01-2024 18:23:48

At Karjat

✻ बुधवार, दि. २७ को प.पू. प्रेमस्वरुपस्वामीजी का ७९वाँ प्रागट्यदिन आत्मीय पर्व के रुप में हरिधाम में बहुत ही भक्तिभाव और उत्साह से मनाया गया। प्रेमस्वरुपस्वामीजी के गादी नशीन होने के बाद यह उनका प्रथम प्रागट्यदिन था, जो इतने बडे पैमाने पर मनाया गया।

दिल्ली से प.पू. गुरुजी, पू. सुहृदस्वामी और संतों, प.पू. आनंदीदीदी और संतबहनें, अनुपम मिशन से सद्गुरु संत प.पू. रतिभाई और अन्य संतभाईयों, सांकरदा से प.पू. बापुस्वामीजी और संतों, गुणातीत प्रकाश से पू. इलेशभाई और संतभाईयों, पवई से प.पू. दिनकरभाई, प.पू. भरतभाई, प.पू. वशीभाई, राजुभाई, पू. अश्विनभाई तथा संतभाईयों और हरिभक्तों, पू. माधुरीबहन, पू. कुसुमताई और संतबहनों इस महोत्सव में खास पधारे थे।

सुबह १० बजे प.भ. पार्थभाई रावल और प.भ. जाग्रतभाई पटेल इन दोनों युवकों को प्रेमस्वरुपस्वामीजीने गुरुजी और दिनकरभाई की हाजरी में पार्षदी दीक्षा दी और उनका नाम पू. कपिलभगत तथा पू. नचिकेताभगत रखा गया। गुरुजी और दिनकरभाईने तथा अंत में प्रेमस्वरुपस्वामीजीने दोनों पार्षदो को आशीर्वाद दिये।

शाम को करीब ६ बजे हरिधाम मंदिर के सामने बनाये गये भव्य मंडप में प्रेमस्वरुपस्वामीजी का प्रागट्यपर्व उत्सव का आरंभ हुआ। शुरुवात में कमलाकार आसन के रथ पर प्रेमस्वरुपस्वामीजी सभामंडप में पधारे, तभी सभी हरिभक्तोंने उनका भाव से दर्शन और सत्कार किया। साथ ही महानुभावो में संतश्री पी.के.स्वामीजी और संतमंडल, गुजरात के अन्न और नागरिक पुरवठा के मंत्री श्री कुंवरजी बावळिया, आत्मीय युनिवर्सिटी के कुलपति डॉ. केशव त्रिपाठीजी, पू. श्रुतिप्रकाशस्वामी और हेमंत वसावाजी तथा कोल्हापुर के पू. कालसिद्धेश्वरस्वामीजी एवं करीब १ लाख हरिभक्तोंने उनका स्वागत किया।

उसके बाद श्री हरिप्रदेश के युवाओंने सुंदर भावनृत्य प्रस्तुत किया और प्रासंगिक उद्बोधन की शृंखला में कई संतों और हरिभक्तोंने प्रेमस्वरुपस्वामीजी का माहात्म्यदर्शन कराया तथा खास करके दि. २२ जनवरी को अयोध्या में होनेवाली रामलल्ला की मूर्तिप्रतिष्ठा के लिये सभीने अत्यंत शुभेच्छा व्यक्त की और दिपावली की तरह इस धन्य अवसर को मनाने अनुरोध किया।

P.P. Premswaroopswamiji's 79th Birthday celebration at Haridham

Snehal Sindhu Jan2024-V04 (kajal).indd 8 29-01-2024 18:23:49

प.पू. गुरुजी ने अपने आशीष में कहा कि आज जो भी वक्ताओंने अयोध्या में रामलल्ला की मूर्ति बैठनेवाली है उसके प्रति जो उत्साह दर्शाया उसके लिये उनको धन्यवाद देते है। बाबरी मस्जिद को हटाकर वहाँ रामजी की छोटी मूर्ति रखी थी। तब हम सभी संतों वहाँ गये थे और धुन की थी। वहाँ रामचंद्रजी की मूर्तिप्रतिष्ठा हो वह सपना हमारे प्रधानमंत्री श्री. नरेन्द्र मोदीजी द्वारा आज साकार होने जा रहा है। इसलिये पूरा भारत देश उनका ऋणी रहेगा। ऐसे पुरुषों हमारी इस धरती पर रहकर धर्म और साकार प्रभु की उपासना में ऐसा योगदान देते रहे वही प्रार्थना।

प.पू. दिनकरभाई ने कहा कि प्रेमस्वरुपस्वामीजी यानि दासत्व का सच्चा स्वरुप। उन्होंने सेवा में अपने देह को तो बिलकुल गिना ही नहीं है। अयोध्या में दि. २२ जनवरी को रामचंद्रजी की मूर्ति की नूतनमंदिर में प्राण प्रतिष्ठा होनेवाली है। आज सारी दुनिया में सबसे बडा युवकों का समाज भारत में ही है। हम सभी बहुत जाग्रत भी है। तो आज के दिन हम ब्र.स्व. हरिप्रसादस्वामीजी और गुणातीत स्वरुपों के चरणों में यही प्रार्थना करें कि अगले साल प्रेमस्वरुपस्वामीजी का ८०वाँ प्रागट्यपर्व इससे भी कई गुना ज्यादा हरिभक्तों की उपस्थिति में उत्साहपूर्वक मना सके।

प.पू. प्रेमस्वरुपस्वामीजी ने आशीष बरसाते हुए कहा कि भगवान रामचंद्रजी अयोध्या पधारे तब से दिवाली का उत्सव शुरु हुआ। वे अयोध्या पधारे तब सबसे पहले अपनी माता कौशल्या को नहीं, लेकिन माता कैकयी को मिलने गये। जिसने उन्हें जंगल में भेजा उसके प्रति भी उनका पूज्यभाव और सुहृदभाव अखंड रहा। महान पुरुषों का एक ही लक्ष्य है वो फिर भगवान रामचंद्रजी का हो या श्रीकृष्ण भगवान का या स्वामिनारायण भगवान का या गुणातीत पुरुषों का। वो यह पाँच सूत्रों में आ जाता है। **(१) भूल जाना (२) छोड देना (३) झुक जाना (४) सहन करना (५) पीघल जाना।** यह बात हमें पकडकर रखनी है। जब तक किसीका स्वभाव या प्रकृति दिखाई देती है तब तक सत्संग शुरु किया ही नहीं है। यह बात कार्यकर्ता, अंबरीष, त्यागी, साधु, हरिभक्त सभीको लागु पडती है। स्वामीजी स्वलक्षी और स्वरुपलक्षी रहकर योगीबापा के पास रहे। ऐसे जियेंगे तब ही रामराज्य की स्थापना होगी। वहाँ केवल सुहृदभाव की दृष्टि होती है। स्वामीजी में सम्यक् रुप से डूबेंगे तो ही यह बात समझमें आयेगी। BAPS संस्था को धन्यवाद देते है कि उन्होंने **'पुरुषोत्तम बोल्या प्रीते'** ग्रंथ दिया। हमें हररोज २ पन्ने उसमें से पढकर उसका मनन-चिंतन करना है। यह पकडेंगे तो काम होगा, वरना कितनी भी सभा करें, समैया करें कुछ फायदा नहीं होनेवाला है। भगवान स्वामिनारायण निष्काम और निर्मान धर्म की स्थापना करने पृथ्वी पर पधारे। दि. २२ जनवरी को रामचंद्रजी की अयोध्या में स्थापना हो तब हम भी घर में दिया जरुर जलाये। सन् १९९४ में आत्मीय पर्व हमने मनाया था तब अयोध्या से पू. नृत्यगोपालदासजी पधारे थे। उनकी इच्छा थी इसलिये स्वामीजी सभी संतों के साथ अयोध्या गये थे। वहाँ जहाँ छोटे रामलल्ला को रखते थे वहाँ दर्शन किये। तब हरिप्रसादस्वामीजीने धुन की थी और कहा था कि इसी स्थान पर रामचंद्रजी की मूर्ति विराजमान होगी। आज वह सचमुच होने जा रहा है। बडेपुरुष का संकल्प हमेशा सच होता ही है। ज्यां जुवे त्यां रामजी बीजुं न भासे रे... यह गुणातीत पुरुषों

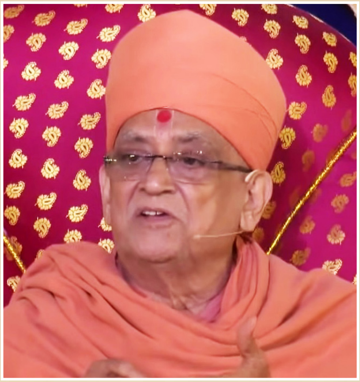

Snehal Sindhu Jan2024-V04 (kajal).indd 9 29-01-2024 18:23:49

की दृष्टि है। तो सभी भगवान तथा गुणातीत पुरुषों के चरणों में प्रार्थना करते है कि वच.ग.प्र. १६ दृढ हो जाये और सभीके प्रति प्रेम हम बढा सके।

सभी केन्द्रो तथा संस्था की ओर से प्रेमस्वरुपस्वामीजी का हार-पुष्पगुच्छ द्वारा सन्मान किया गया।

पवई मंदिर की ओर से भी राजुभाई ठक्कर तथा अश्विनभाईने विशिष्ट हार पहनाया।

नेत्रंग के आदिवासी युवकोंने बहुत अच्छा भावनृत्य प्रस्तुत किया और बाद में महाआरती तथा आतिशबाजी के साथ इस भव्य समैया की पूर्णाहुति हुई। सभी संतोंने अथाक परिश्रम करके सारी व्यवस्था बहुत अच्छे से सँभाली।

P.P. Premswaroopswamiji's 79th Birthday celebration at Haridham

दि. २८ को दिनकरभाई, भरतभाई और संतभाईयों अनुपम मिशन में संतभगवंत साहेबजी के दर्शन के लिये पधारे। फिर वहाँ से गुणातीत ज्योत में प.पू. हंसादीदी, प.पू. देवीबहन, पू.डॉ. नीलमबहन और संतबहनों को भी मिले।

At Anoopam Mission

At Gunatit Jyot

Snehal Sindhu Jan2024-V04 (kajal).indd 10 29-01-2024 18:23:56

दि. २९ की सुबह सभी भाईयों नूतन सांकरदा मंदिर के पाँचवे पाटोत्सव के लिये पधारे। पू. वजुभाई और पू. इलेशभाईने बहुत ही अच्छी तरह से महापूजा के साथ पाटोत्सव विधि संपन्न की। उसके बाद सभी विशिष्ट वडील संतभाईयोंने आशीष दिये।

Patotsav at Sankarda

✼ रविवार, दि. ३१ दिसंबर, २०२३ के अंतिम दिन 'अक्षरधाम' स्वामिनारायण मंदिर, पवई में २२३वे 'स्वामिनारायण महामंत्र प्रदान दिन' और पू. हरखचंदभाई के ८५वे प्रागट्यदिन तथा नये साल के स्वागत निमित्त शाम को विशिष्ट सभा हुई।

प.पू. वशीभाई ने कहा कि हरखचंदभाई के प्रागट्यदिन पर हम प.पू. हरिभाई साहेब को भी याद करते है। गुरुहरि काकाजी महाराज की कृपा से माणावदर मंडल खडा हुआ, जिसमें हरिभाई का बडा योगदान रहा। हरखचंदभाईने भी इतनी अद्‌भुत सेवा की है कि उसमें आपको एक गलती भी मिलेगी ही नहीं। हम सेवा करने के लिये करते है, लेकिन हरखचंदभाई महिमा से व्यवस्थित करते है। भक्त की भक्ति करनी वह बहुत बडी बात है, जो उन्होंने राजुभाई की सेवा करते हुए की। ऐसी सेवा हमें हरेक की करनी है। हरखचंदभाई को पता है कि मेरे शरीर के लिये क्या जरुरी है? तो वे वैसा ही भोजन पसंद करते है। वे स्वाद पर कभी नहीं जाते, लेकिन सेहत के मुताबिक खाना ग्रहण करते है। उनके जैसा विवेक हमें सीखना है।

आज हम स्वामिनारायण मंत्र प्रदान दिन भी मना रहे है। काकाजीने पत्रसंजीवनी में मंत्रयोग की बात बताई है। वो कहते है कि नामीअे सहित नाम लेने से तत्काल फल मिलता है। अगर हम गुणातीत पुरुषों की स्मृति के साथ स्वामिनारायण मंत्र जाप करेंगे तो उसमें शक्ति ज्यादा मिलती है। उस मंत्र को हम हृदय में धारण करेंगे तो जीव ब्रह्मरुप हो जायेगा। हम केवल पाँच हरिभक्तों को याद करके भी धुन करेंगे तो भी हमारा काम होगा। काकाजीने हमें स्वरुपयोग की भेट देकर कैसे धुन करनी वह सीखाया। तो स्वामिनारायण मंत्र हम दृढ कर ले वही प्रार्थना।

P. Harakhchandbhai 85th Birthday celebration, Swaminarayan Mahamantra Din and New Year celebration at "Akshardham " Temple, Powai

Snehal Sindhu Jan2024-V04 (kajal).indd 11 29-01-2024 18:24:02

प.पू. भरतभाई ने कहा कि आज पूरी दुनिया में अलग अलग तरीके से सभी २०२४ के स्वागत के लिये आनंद कर रहे है। हम स्वामिनारायण महामंत्र के जाप के साथ नये साल का स्वागत करेंगे। स्वामिनारायण भगवान को सद्गुरु रामानंदस्वामीने जब गादी सौंपी तब दो नाम दिये थे - **(१) सहजानंदस्वामी। (२) नारायणमुनि।** इसलिये सहजानंदस्वामी का **स्वामी** और नारायणमुनि का **नारायण।** इसप्रकार स्वामिनारायण मंत्र स्वयं भगवानने सभीको दिया। सबसे बडी बात यह है कि इस मंत्र में कोई विधिनिषेध नहीं है। हरेक मंत्र को विधि के साथ बोला जाता है, केवल स्वामिनारायण मंत्र ऐसा है जिसमें कोई विधि की जरुरत नहीं पडती। उसके लिये कोई बंधन नहीं है, कभी भी, कहीं भी इस मंत्र का जाप कर सकते है।

आज हम हरखचंदभाई का भी प्रागट्यदिन मना रहे है। उनका जीवन बहुत अनोखा है। गुरुहरि काकाजीने उनको दो बात कही थी कि **(१)** आप तारदेव को अपना घर मानकर रहना। **(२)** किसीका देखना नहीं। वह बात हरखचंदभाई ध्यान में रखकर साधु का जीवन जी रहे है। ८५ साल की उम्र में भी वे बहुत ऊर्जावान है। उनकी सेहत हमेशा अच्छी रहे ऐसी काकाजी को प्रार्थना करते है।

२०२४ का नया साल आ रहा है तो हमें नया संकल्प लेना है। **(१) हररोज हम ५ वाक्य माहात्म्य का लिखे।** नकारात्मक लिखना होगा तो हम सोचते भी नहीं है और सहज ही लिख सकते है। उसमें से बाहर निकलकर हमें सकारात्मक बातें लिखनी शुरु करनी है। **(२) हररोज १५-२० मिनट ध्यान करना है।** अपने आपको खोजना है कि हम कहाँ पहुँचे? **(३) हमें हरेक के लिये अच्छा ही सोचना है।** उस बात की हमें प्रेकटीस करनी है।

संप-सुहृदभाव-एकता नहीं रहती क्योंकि हम नकारात्मक सोचते है। अगर अभी भी हम सकारात्मक जीवन नहीं जी रहे है तो वह बडे दु:ख की बात है। कुछ भी ना हो तो कम से कम हम रात को प्रायश्चिरुप प्रार्थना तो अवश्य करें। भगवान को जो पसंद है ऐसे हम जीवन जीये ऐसे दिल से प्रार्थना करेंगे तो जरुर बक्षिस में हमें भगवान वह गुण देंगे। ऐसे जीवन जीयेंगे तो हमारी प्रगति बहुत ज्यादा होगी। उससे गुणातीत पुरुष का भी विशिष्ट राजीपा मिलेगा। तो यह तीन बातें हम दृढ करें और सभीको सुख-समृद्धि-आनंद सहज ही प्राप्त हो वही प्रार्थना।

प.पू. दिनकरभाई ने कहा कि ३६५ दिन में से आज का दिन ऐसा है जो हम रात को १२ बजे तक मनाते है। भगवान स्वामिनारायणने भी आज के दिन मंत्र दिया, जिससे आनेवाले साल के लिये हम तैयार हो जाये। तो हम केवल आज ही नहीं, लेकिन हररोज धुन करने की **Practice** करें। गुरुहरि काकाजीने बताया था कि ७ करोड मंत्र है। उसमें से दो प्रकार के मंत्र की बात बताई। **(१)** प्रगट और

Snehal Sindhu Jan2024-V04 (kajal).indd 12 29-01-2024 18:24:08

प्रत्यक्ष का (२) परोक्ष का। एक जीवंत और दूसरा पहले से चला आया है। परोक्ष के मंत्र ७ करोड में ९५% है। प्रगट और प्रत्यक्ष के बहुत कम है। रामचंद्र भगवान पृथ्वी पर थे तब राम मंत्र का महिमा नहीं था, लेकिन आज सभी हरे राम! हरे राम! करते है। परोक्ष मंत्र की तुलना में प्रगट का मंत्र बहुत शक्तिशाली होता है। आज तक प्रगट और प्रत्यक्ष का गायत्री मंत्र बोला जाता था। वो मंत्र किसी भगवानने नहीं दिया है। लेकिन स्वामिनारायण मंत्र भगवानने खुद दिया है। सामान्य देवता नहीं, खुद परब्रह्मने दिया है। गुणातीतानंदस्वामीने कहा है कि इस मंत्र का प्रभाव सारी दुनिया में पडेगा। दूसरे मंत्र उनके निश्चित स्थान तक ही लेकर जाते है। लेकिन स्वामिनारायण मंत्र सर्वोच्च स्थान अक्षरधाम तक लेकर जाते है। क्योंकि यह मंत्र पहले हमें ब्रह्मरुप बनाता है। तो स्वामिनारायण मंत्र का महिमा के साथ जाप करेंगे तो बहुत बल मिलेगा। काकाजीने धुन की Technique बताई थी कि हम ९ प्रसंगो की स्मृति करते हुए धुन करें तो वह हमें अन्य विचारों में भटकने नहीं देगा। विज्ञानने में साबित किया है कि मन की बिमारी की वजह से हम चलित होते है। तो हम मंत्र का जाप करेंगे तो हमारा मन स्थिर रहेगा।

आज हम हरखचंदभाई का प्रागट्यदिन मना रहे है। उनकी सेवाभावना जोरदार है। उनका एक लक्ष्य है कि काकाजी की उत्तम सेवा करके उनको राजी करुं। छोटी सी सेवा भी वे उत्तम तरीके से करते है। आज भी यहाँ वो भोजन बनाते है तो उसमें विशिष्ट भाव होता है। राजुभाई भट्ट की सेवा उन्होंने की वह उसमें पूरी तरह डूब गये थे। बीमारी आना वह हमारा प्रारब्ध है। वह दूर करने के उपाय यानि (१) घर का इलाज (२) डॉक्टर। उससे ऊपर का इलाज हरखचंदभाईने बताया कि हमें दिव्यभाव से सेवा करनी चाहिए, तो प्रारब्ध सहज ही टल जायेगा। जब यहाँ जंगल था तब से लेकर अज तक पवई मंदिर की भाव से अद्‌भुत सेवा वे करते है। वैसे ही हरिभाई साहेब का भी प्रागट्यदिन है। उन्होंने काकाजी का अद्‌भुत सेवन किया था। उनको सभी छोटे काकाजी कहते थे। तो हरखचंदभाई की तबियत अच्छी रहे वही सभी गुणातीत स्वरुपों के चरणों में प्रार्थना।

प.भ. प्रसादभाई पाटील और प.भ. निशिताबहन महेताने भजनों की अंताक्षरी का आयोजन किया था, जिसमें भाईयों-बहनों में चार ग्रुप बनाया गये थे और आश्चर्य की बात यह थी कि सभी ग्रुपने सभी प्रश्नों के सही उत्तर दिये, इसलिये सभीको विजेता घोषित किये गये।

उसके बाद सभीने रास-गरबा करके आनंदोत्सव किया।

Snehal Sindhu Jan2024-V04 (kajal).indd 13 29-01-2024 18:24:13

अंत में स्वामिनारायण महामंत्र की विशिष्ट धुन करके नये साल का केक कटिंग के साथ स्वागत किया। सभी कुल्फी का प्रसाद लेकर विदा हुए।

युवकमंडलने बहुत ही अच्छा सुशोभन करके इस माहौल को उत्सवमय बनाया।

✻ मंगलवार, दि. २ जनवरी, २०२४ को कंथारिया के पू. विज्ञानस्वामीजी, पू. अक्षरस्वामीजी और पू. बिंपलभाई 'अक्षरधाम' स्वामिनारायण मंदिर, पवई पधारे थे। सभी संतभाईयों को मिलने के बाद प.भ. मितेशभाईने उन्हें पवई के Project की जानकारी दी जिससे वे काफी प्रभावित हुए तथा इस Project की सफलता हेतु आशीष भी दिये।

P. Vigyanswamiji, P. Aksharswamiji and P. Bimpalbhai at "Akshardham" Temple, Powai

॥ સ્વામિશ્રીજી ॥

અકલ્પ્ય તારી રહેણીકરણી, કળી ન શકાય અદ્‌ભુત એવી...

ગુણાતીત જ્યોતનાં બહેનોએ મોટાપુરુષની રીતિનીતિને અનુલક્ષી ખૂબ જ પ્રેરણાદાયી ભજન – 'પોકારું ત્યાં આવે તું...' રચ્યું છે, જેની કડી – 'તું તો જીવે જે પળ, હેતુ એક કેવળ, દષ્ટિવાળા જીવોને લેવાને આગળ...' પ્રમાણે મોટાપુરુષ કેવળ જીવલક્ષી જ જીવન જીવતા હોય છે અને એમનું બોલવું-ચાલવું, ખાવું-પીવું, ઊઠવું-બેસવું, હરવું-ફરવું, વાતો કરવી કે મૌન રહેવું, વઢવું કે હેત કરવું જેવી તમામ ક્રિયા કેવળ સામે આવેલ અથવા શરણમાં આવેલ ચૈતન્યને આગળ લેવા જ અર્થાત્ એનાં જીવનાં રૂડાં માટે જ હોય છે એ વાત બહુ જ સુંદર રીતે કરવામાં આવી છે.

Snehal Sindhu Jan2024-V04 (kajal).indd 14 29-01-2024 18:24:18

વિક્રમ સંવત ૨૦૮૦ના મિલન સમારંભના દિને પ.પૂ. ભરતભાઈએ આ જ વાતને ખૂબ અદ્‌ભુત રીતે સમજાવી હતી અને તેના અનુસંધાનમાં બ્ર.સ્વ. યોગીજી મહારાજના અને ગુરુહરિ કાકાજી મહારાજના એક-બે પ્રસંગો કહી એને વધુ સુસ્પષ્ટ કરી હતી. ભરતભાઈની આ જ વાત અને વિચારને ધ્યાનમાં રાખીને ગુણાતીત પુરુષોના કેટલાક પ્રસંગોને આપણે અહીં નિહાળીશું.

વિદ્યાનગરમાં જ્યારે ગુણાતીત જ્યોતનું બાંધકામ શરૂ કરવાનું હતું તે પહેલાં ઈ.સ. ૧૯૬૩ની શરદપૂનમે કાકાજી-પપ્પાજી યોગીબાપાનાં દર્શને ગોંડલ ગયા હતા. ત્યારે બાપાએ તેમને કહ્યું કે **'હવે તમે બહેનોનું જુદું કરી આપો.'** અર્થાત્ એમની રહેવાની તથા ખાવાપીવાની જેવી તમામ સગવડો માટે એક અલાયદું સ્વતંત્ર સ્થાન કરી આપો. ત્યારે કાકાજી અને પપ્પાજીએ એમને પૂછ્યું કે 'ક્યાં કરીએ?' તો બાપાએ ખૂબ જ સ્પષ્ટપણે કહ્યું કે 'વિદ્યાનગરમાં, તમારા પ્લૉટમાં.' તે વખતે તો સંસ્થાથી જુદા થવાનો કોઈ વિચાર જ નહતો, તેમ છતાં દૂરંદેશી દૃષ્ટિ વાપરી બાપાએ આ વચન ઉચ્ચાર્યાં હતાં!

કાકાજી-પપ્પાજીએ બાપાને પૂછ્યું પણ ખરું કે 'અહીં ગોંડલમાં કરીએ તો? બહેનોને તમારાં દર્શન પણ થાય અને મંદિરની સેવા પણ થાય.' તે વખતે બાપાએ કહ્યું હતું કે 'ના, સત્પુરુષ ક્યાં અદૃશ્ય થવાના છે? વિદ્યાનગરમાં તમારા પ્લૉટમાં જ કરો.' કાકાજી-પપ્પાજી તો અત્યંત સરળ અને સ્વરૂપનિષ્ઠ પુરુષો હતા તેથી તેમણે વધુ વિચાર્યું નહીં અને એ માટેની તમામ તૈયારીઓ વિદ્યાનગરમાં આરંભી દીધી. એ પછી થોડા જ વખતમાં કાકાજી-પપ્પાજીને અક્ષરપુરુષોત્તમ સંસ્થામાંથી સ્વતંત્રતા મળી ત્યારે પપ્પાજીએ કહ્યું હતું કે 'વિદ્યાનગરમાં બહેનો માટે ગુણાતીત જ્યોત ઊભી કરી That was the wisest decision.' આમ બાપાની કેવી ચૈતન્યલક્ષી દૃષ્ટિ હતી, તેનો પ્રત્યક્ષ અનુભવ અને પ્રમાણ મળ્યું!

ઈ.સ. ૧૯૬૫માં સંતવર્ય પ.પૂ. દાસસ્વામીજીને વસંતપંચમીએ જ્યારે ભાગવતી દીક્ષા આપવાની હતી ત્યારે યોગીબાપાએ એમનું નામ **'સાધુ યજ્ઞવલ્લભદાસ'** રાખ્યું. સંજોગોવશાત્ બાપાની આજુબાજુ રહેતા અંગત સેવકો પાસેથી કોઈ રીતે દાસસ્વામીજીને આ વાતની જાણ થઈ ગઈ હતી. કારણ કે એક-બે જણા એમને દીક્ષા આપતાં પહેલાં જ 'વલ્લભદાસ, વલ્લભદાસ' કહીને ચીડવતા હતા. આથી દાસસ્વામીજીને આ નામ પસંદ નહતું. તેથી તેમણે બાપા આગળ રજુઆત કરી હતી કે 'બાપા, મારે આ નામ નથી જોઈતું, મને કોઈ બીજું નામ આપો.' ત્યારે બાપાએ ખૂબ જ સ્પષ્ટ રીતે કહ્યું કે 'ગુરુ, મારા ગુરુનું નામ 'યજ્ઞપુરુષદાસ' અને એમને પ્રિય એટલે 'વલ્લભ' એથીય 'યજ્ઞવલ્લભ' નામ અમને પણ ખૂબ જ પ્રિય છે તેથી અમારા ગુરુ શાસ્ત્રીજી મહારાજની સ્મૃતિ અખંડ રહે એટલે તમને આ નામ આપ્યું છે.' આ સાંભળી દાસસ્વામીજીને એકદમ જ જીવમાં મનાઈ ગયું કે 'ઓહોહો! શાસ્ત્રીજી મહારાજની સ્મૃતિવાળા આ નામથી વિશેષ બીજું કયું નામ હોઈ શકે?' અને તેમણે સહજભાવે ખૂબ જ ખુશીથી આ નામ સ્વીકારી લીધું. બાપાની કેવી અનોખી દૃષ્ટિ!

તા. ૨૮ મે, ઈ.સ. ૧૯૬૬માં કાકાજી, પપ્પાજી તથા એમના હેતવાળા અક્ષરપુરુષોત્તમ સંસ્થામાંથી સ્વતંત્ર થયા તે પહેલાં **સંતભગવંત સાહેબજી** અને તેમના સાથીમિત્રોને બાપાએ સાધુ થવા આજ્ઞા કરી હતી. અને તે સહુએ હોંશે હોંશે ખૂબ જ ઉત્સાહથી અનુમતિ પણ આપી હતી, પરંતુ અચાનક જ બાપાએ તા. ૧૪મી મેએ સવારે પાંચ વાગે અમદાવાદ શાહીબાગ મંદિરે સાહેબજીને બોલાવ્યા અને કહ્યું કે 'હવે તમને ભગવાં નથી આપવા, પણ તમારું સહુનું અંતર ભગવું કરવું છે. તમે સંસારમાં જશો નહીં અને આ કપડે રહી ભગવાનનું કામ કરજો.'

તે વખતે તો ખૂબ જ સરળ એવા સાહેબજીએ યોગીબાપાની આજ્ઞા શિરોમાન્ય કરી અને તેમના સાથીદારોએ આ વાત સહજ જ સ્વીકારી. ભગવાં ધારણ કર્યાં વગર આ જ કપડાંમાં સાધુ તરીકેનું જીવન જીવવું એ તદ્દન નવી જ પરિકલ્પના બાપાએ સાહેબજી અને સાથીદારો આગળ મૂકી હતી, પરંતુ થોડાં જ વખતમાં સાહેબજી અને અન્ય ભાઈઓ કાકાજી-પપ્પાજી સાથે જોડાયા અને એ પછીનો ઈતિહાસ તો સુવર્ણ અક્ષરે લખાઈ ગયો. એમના જ પદાનુસારે ચાલીને સેંકડો યુવાનોએ 'નેકટાઈ' સાધુની દીક્ષા લીધી અને ગુણાતીત સમાજનાં તમામ કેન્દ્રોમાં

Snehal Sindhu Jan2024-V04 (kajal).indd 15 29-01-2024 18:24:18

આવા સંતભાઈઓની ફોજ ઊભી થઈ ગઈ અને તેમના દ્વારા હજારો યુવાનોને અદ્‌ભુત પ્રેરણા મળે એવો દિવ્ય જીવનનો માર્ગ ખૂલી ગયો. યોગીબાપાની કેવી અદ્‌ભુત દૂરંદેશી દૃષ્ટિ!

પ.પૂ. ગુરુજી (દિલ્હી)ને સંસ્થાથી છૂટા થયા બાદ એક જ વર્ષમાં એટલે કે ઈ.સ. ૧૯૬૭માં કાકાજીએ દિલ્હી જવા આજ્ઞા કરી અને ડિસેમ્બરમાં ગુરુજીએ પહેલી જ વાર દિલ્હીમાં પગ મૂક્યો. ત્યારે તો દિલ્હીમાં કોઈ જ સત્સંગી નહતા અને ગુરુજીનું ચોક્કસ નિવાસસ્થાન પણ નહતું. પરંતુ કાકાજીએ કહ્યું હતું કે 'બાપાની મરજી છે એટલે હું તને ત્યાં મોકલું છું.' ગુરુજીએ પોતાની પ્રતિકૂળ પ્રકૃતિ કે નાજુક તબિયત કે સગવડનો અભાવ કે દિલ્હીની વિષમ આબોહવા – કશું જ ગણકાર્યા વગર કાકાજીની આજ્ઞા પાળી તો આજે આપણે જોઈએ છીએ કે દિલ્હી અને ઉત્તર ભારતમાં તેમના દ્વારા કેવા અદ્‌ભુત સમાજનું સર્જન થયું! કાકાજીની અદ્‌ભુત ચૈતન્યલક્ષી દૃષ્ટિનો આ જડબેસલાક પૂરાવો છે!

કાકાજીના ખૂબ જ લાડીલા અને નિષ્ઠાવાન હરિભક્ત અ.નિ.પ.ભ. મહેશભાઈ ઝવેરીને ઑક્ટોબર, ૧૯૭૯માં કેન્સરનું નિદાન થયું હતું. કાકાજીને આ વાતની જાણ થતાં તેમણે કહ્યું હતું કે 'મહેશભાઈને કેન્સર મટી જશે અને તેઓ સારા થઈ જશે.' એ માટે તેમણે ખૂબ જ ધૂન કરી હતી તથા બધા હરિભક્તો પાસે પણ એમને માટે ભજન કરાવ્યું હતું. મહેશભાઈને પછી તબિયતમાં ઘણો ફરક પડ્યો હતો, પરંતુ એ પછી થોડાં જ વખતમાં તેઓ ધામમાં ગયા, તેથી તેમના પુત્ર પ.ભ. ચંદુભાઈ ઝવેરીને ખૂબ જ આઘાત લાગ્યો કે કાકાજી જેવા ગુણાતીત પુરુષે આટલી ખાત્રીપૂર્વકની વાત કરી હોવા છતાં તેઓ ધામમાં કેવી રીતે ગયા? તેથી એક દિવસ તેઓ સીધા જ તારદેવ મંદિરે આવ્યા ને કાકાજી આગળ ખૂલ્લા દિલે આ વાત કરી. ત્યારે કાકાજીએ એમને કહ્યું કે 'ભાઈ, તારા બાપુજી મહેશભાઈની ઈચ્છા જ ધામમાં જવાની હતી અને તેઓ ઘણા વખતથી એ માટેની પ્રાર્થના પણ કરતાં હતા. તેથી મહારાજ એમને ધામમાં લઈ ગયા.' ચંદુભાઈને આ વાત એકદમ ગળે ઊતરી ગઈ અને કાકાજી પ્રત્યે ખૂબ જ ભાવ થયો કે એમણે કોઈપણ જાતની આડીઅવળી વાત કર્યા વગર એમના બાપુજી જે કારણસર ધામમાં ગયા એ સ્પષ્ટ બતાવી દીધું. કાકાજીની આવી સ્પષ્ટતા અને નિખાલસપણું ચંદુભાઈને જીવમાં અસર કરી ગયાં!

પ.પૂ. વશીભાઈએ જ્યારે B.Com.નો અભ્યાસ પૂરો કર્યો ત્યારે એમણે આગળ શું કરવું એ માટે ઘણા બધા વડીલો પાસેથી સૂચનો આવ્યાં હતાં. કોઈકે તેમને વકીલ થવા કહ્યું તો કોઈકે બીજું કંઈ કહ્યું, પરંતુ કાકાજીએ સ્પષ્ટ રીતે તેમને 'C.A.'નો અભ્યાસ કરવાની આજ્ઞા કરી હતી. તારદેવ મંદિરે રહી C.A. કરવું એ તદ્દન અશક્ય લાગે એવું હતું. કારણ કે C.A. નો અભ્યાસ આજે પણ ખૂબ કઠિન છે તો આજથી ૩૫–૪૦ વર્ષ પહેલાં કેવો હશે? અને ત્યારે તો આજના જેવી સુવિધા પણ નહતી અને તારદેવ આટલા બધા ભાઈઓ તથા હરિભક્તોના સમૂહમાં રહી C.A.નો અભ્યાસ કરવો એ તો અસંભવ જ લાગતું હતું! પરંતુ વશીભાઈને કાકાજી પ્રત્યે ખૂબ જ વિશ્વાસ હતો તો તેઓ C.A. તો થયા જ, સાથે પોતાના હાથ નીચે કેટલાયને C.A.નો અભ્યાસ કરવા પ્રેરણા સાથે માર્ગદર્શન પણ આપ્યું. તેમનું C.A.નું જ્ઞાન અને માર્ગદર્શન સહુને માટે તેમ જ યોગી ડિવાઈન સંસ્થા માટે અત્યંત મહત્વનું સાબિત થયું. એ જ રીતે કાકાજીએ તેમને મહાપૂજા કરવાની આજ્ઞા કરી હતી. ત્યારે તો તેમને મહાપૂજાનો 'મ' પણ ખબર નહોતી અને એક સ્થાને બેસીને તેઓ લગભગ કલાક સુધી મહાપૂજા કરી શકે એવી તેમની પ્રકૃતિ પણ નહીં. તેમ છતાં કાકાજીએ આજ્ઞા કરી હતી તો પોતાના મનને મરોડીને પણ તેમણે મહાપૂજા શીખી, એટલું જ નહીં પણ તેમની મહાપૂજા સમગ્ર ગુણાતીત સમાજમાં સીમાચિહ્નરૂપ બની ગઈ, એ કક્ષાએ તેમણે તેને આત્મસાત કરી લીધી. કાકાજીની એમને માટે કેવી દૂરંદેશી દૃષ્ટિ અને કાકાજીના વચનપાલનનો તેમનો કેવો અદ્‌ભુત ખટકો!

હે વાંચકો! ઉપરના તમામ પ્રસંગો પરથી ગુણાતીત પુરુષની કેવી જીવલક્ષી અને ચૈતન્યોને આગળ લેવાની દૃષ્ટિ હોય છે તેનો આપણને કંઈક ખ્યાલ આવે છે. આવા તો અનેક હરિભક્તોના કેટલાય પ્રસંગો છે જેનું વિસ્તારથી વર્ણન કરવા જઈએ તો કેટલાંય પાનાં ભરાય. પરંતુ ખરેખર તો આપણા જીવનમાં એવું એમનું આપણા માટેનું એક વચન કે એકાદ આજ્ઞાને જો સર્વોપરી માની એના માટે લઈ મંડીએ તો આપણા જીવનમાં પણ ખરેખર અણધાર્યું પરિવર્તન આવે શકે.

Snehal Sindhu Jan2024-V04 (kajal).indd 16 29-01-2024 18:24:18

પ.પૂ. ભરતભાઈએ આ જ રીતિનીતિ અપનાવી છે અને એ રીતે પોતાનું જીવન કંડાર્યું છે તો આજે તેઓ સહુને માટે પ્રેરણારૂપ તો બન્યા જ છે અને કાકાજીનો અદ્‌ભુત દિવ્ય વારસો ચાલુ રાખી અનેક ભક્તોને આ માર્ગે વાળીને તેઓના પથદર્શક પણ બન્યા છે. તેમના ૭૦મા પ્રાગટ્યપર્વે (તા. ૩૧ જાન્યુઆરી) આપણે ભગવાન સ્વામિનારાયણ, સર્વે ગુણાતીત પુરુષો તથા ભરતભાઈનાં ચરણે પ્રાર્થીએ કે અમને અમારા જીવનમાં શું નડે છે અને અમારે શું કરવું જોઈએ એની સ્પષ્ટ સૂઝ તમે આપો અને એ પ્રમાણે અમો વર્તી શકીએ એવો અમારા સત્પુરુષ અને આપની સાથેનો ખૂબ જ નિખાલસ ને સરળ સંબંધ દઢ થાય અને આપ સહુનું વચન માનવામાં અમને ખૂબ જ બળ-બુદ્ધિ-પ્રેરણા મળે એવા આશીર્વાદ અર્પશોજી.

વિરલ વિભૂતિ ગુરુહરિ કાકાજી

– સાધુ યજ્ઞવલ્લભદાસ (પૂ. દાસસ્વામીજી)

તા. ૩જી ફેબ્રુઆરી – સમગ્ર ગુણાતીત સમાજ માટે ઐતિહાસિક ને મહામંગલકારી દિન! આ વખતે પ્રભુ સાક્ષાત્કારના એ રૂડા અવસરને ૭૨ વર્ષ પૂર્ણ થશે!

ભગવત્સ્વરૂપ ગુરુહરિ કાકાજીએ સ્વામીશ્રી શાસ્ત્રીજી મહારાજના લાડીલા માનસપુત્ર ને સ્વામીશ્રી બ્ર.સ્વ. યોગીજી મહારાજનાં હૃદયપાત્ર ને અનન્ય એવી પ્રસન્નતાના સુવર્ણપાત્ર હતા! તેઓની સ્વરૂપનિષ્ઠા ને માહાત્મ્યની ખુમારી! તેઓની સુહૃદભાવ ને નિર્દોષબુદ્ધિ સભર આગવી ખાનદાની! તેઓનું સર્વોપરી ને મૂક સમર્પણ! અનંત અપમાન, ઉપેક્ષા ને તિરસ્કારો વચ્ચે પણ હિમાલયસમ તેઓની સ્થિરતા ને સરળતા! અન્ય વરિષ્ઠ ગુણાતીત વિભૂતિ સ્વરૂપો સાથેની તેઓની ખૂબ જ ખુલ્લા દિલની દાસત્વસભર મૈત્રી ને સખ્ય! યોગમાં આવેલા કે નહીં આવેલા તમામ નાના-મોટા મુક્તો માટેનું એમનું નિર્વ્યાજ ને નિરપેક્ષ વાત્સલ્ય! પરોક્ષના સદ્‌ભાવવાળા મુક્તો એમના તરફ સહજ જ આકર્ષાય છતાં તેનું રંચમાત્ર જાણપણું નહીં ને સહુને તત્કાળ યોગીબાપા ને શાસ્ત્રીજી મહારાજના માહાત્મ્યમાં તરબોળ કરી દેતી એમની કૌશલ્યસભર, કુનેહસભર સર્વદેશીયતા! જાણે સતત ચોવીસ કલાક 'સ્વામિનારાયણ' મહામંત્રમાં પોતે રમમાણ ને સામે બેઠેલા તમામને એ આકારે કરી દેવાનો એમનો સમયાતીત ખટકો! કેવું ને કેટલુંક વર્ણન કરવું?

વ્યાવહારિક દૃષ્ટિએ પણ એમનું ગુજરાતી ને અંગ્રેજી ભાષા પરનું આગવું પ્રભુત્વ! સહજ જ ગુલાબી સ્મિતથી સભર એવું તેઓનું ચિત્તાકર્ષક વ્યક્તિત્વ! જેને જેને આવો આસ્વાદ એક વખત પણ પ્રાપ્ત થયો હોય તે એમને ભૂલી ના શકે તો આપણે સહુ ચારેય પાંખાળા ગુણાતીત સમાજના આબાલવૃદ્ધ સંતો-મુક્તો, સાધકો-સેવકો તેઓને કેવી રીતે ભૂલી શકીએ!

Snehal Sindhu Jan2024-V04 (kajal).indd 17 29-01-2024 18:24:18

ખરેખર... હે કાકાશ્રી! આપે અમ સહુ માટે દિવસ-રાત એક કર્યાં છે. લોહીનું પાણી કર્યું છે! ગુરુહરિ બ્ર.સ્વ. હરિપ્રસાદસ્વામીજી તો આપને, અનંત રીતે સંભારતા ને બિરદાવતા! તો હવે આપના આ ૭૩મા સાક્ષાત્કારદિને અંતરથી અતિ સાચાભાવે પ્રાર્થીએ કે આપને ગુરહરિ સ્વામીશ્રીને, સહુ પ્રત્યક્ષ વિભૂતિ સ્વરૂપો તથા આપના મુખનું પાન એવા પ્રગટ ગુરુહરિ પ.પૂ. પ્રેમસ્વરૂપસ્વામીજીને દિલથી 'હાશ' કરી શકીએ ને તે માટેની દઢ સુરુચિ ને તત્પરતા નિરંતર સતેજ ને પ્રજ્વલિત રહે!

તા. ૩૧/૦૧/૨૦૨૪

॥ સ્વામિશ્રીજી ॥

પરમ પૂજ્ય ભરતભાઈના ૭૦મા પ્રાગટ્યપર્વે
સંત તું છે મોક્ષનું દ્વાર

– પ.ભ. કિશોરભાઈ ગિલ્ડર

હે મન વગરના માનસપુત્ર ! હે કાકાજીના અલગારી સાધુ,
કાકાજીનું અલૌકિક સર્જન તું, તુજમાં થતું સહુને એ દર્શન,
પ્રગટ છે, સાકાર છે, જીવંત છે, અહો ! તુજ થકી અખંડ છે એ,
અંતર ધવલ ને તન છે શ્યામ, એમાં રાસ રમે અવિરત ઘનશ્યામ.

તારી સૂરત ધૈર્યની મૂરત, શાંત-પ્રશાંત જાણે સરિતાનાં પાણી,
ના ભરતી, ના ઓટ, દીસે જ્યાં ખળખળ કેવળ વહેતાં પાણી,
તારી વાણી અમૃતવાણી, અસ્ખલિત વહેતી રહે પરાવાણી,
તારું અંતર વરસે નિરંતર, હેત-પ્રીતની સ્નેહ સરવાણી.

તારા અંતરે સૂરજનાં અજવાળાં, તારી ઝોળીમાં અલખના નજારા,
હોય તિમિર જન્મોનાં ગાઢાં, પળમાં દૂર કરે એ અંધારા,
નાદબ્રહ્મના સૂર તું રેલાવે, આંખોથી તું અમી વરસાવે,
સાક્ષી ભેદે, અંતરપટ ખોલે, જે કોઈ તારા સંબંધમાં આવે.

કાકાજીએ સેવ્યા જે સપનાં, પૂરાં કરવાં એ જ નિર્ધાર,
ભક્તિ ને પ્રાર્થનાના રંગો પૂરી, કર્યાં એ સપનાં સાકાર,
કાકાજીનું સ્વરૂપ બન્યો આજ, વરસી કૃપા અનરાધાર,
તારે સંબંધે પરમપદ પામ્યાં, સંત તું છે મોક્ષનું દ્વાર.

આતમ તારો નિરખે નિરંતર, સહુનું જાણે, સર્વ કંઈ જાણે,
ભીતર જુએ, ભીંત પાર જુએ, જાણે છતાં અણજાણ બની જુએ,
જ્યાં જુએ ત્યાં ગુરુહરિ જુએ, એની રાસલીલાને જાણે,
ના બીજે દૃષ્ટિ, ના બીજી સૃષ્ટિ, કાકાજી તણી મસ્તી માણે.

Snehal Sindhu Jan2024-V04 (kajal).indd 18 29-01-2024 18:24:24

સરળ, સુગમ ને વિનમ્ર સાધુ તું, પ્રભુતામય તારી સાધુતા,
ના અહમ્, ના અસ્મિતા દીસે, શૂન્ય કરી તે તારી પ્રતિભા,
શબ્દાતીત, ભાવાતીત, દેહાતીત તું, અસલી સાધુ ગુણાતીત તું,
સહુનું રાખે, સહુનું સાંખે, સહુનું ગમાડતો સર્વદેશીય તું.

સાથીદારોનો પરમ સુહૃદ તું, પરાભક્તિની સૌરભ છે તું,
અલ્પસંબંધીનો દાસ છે તું, ગુરુ હૃદયની હાશ છે તું,
સહજાનંદની રસઘનમૂર્તિ દિવ્ય, મંગલ અને કલ્યાણકારી,
એ મૂર્તિ તે અખંડ ધારી, તું સાધુ પરમ હિતકારી.

મૂર્તિ સ્વરૂપે પ્રત્યક્ષ છે તું, અણજાણ બની તારું સ્વરૂપ છૂપાવે,
મહામૂલી મૂર્તિનો છે ધનિક તું, એને વાપરવામાં બને વણિક તું,
'અલખ' રાખેલ 'અક્ષર' છે તું, એ અનુભૂતિ આજે કરાવ,
'ભરત' નામે 'ભાસ્કર' છે તું, એ પ્રતીતિ સહુને કરાવ.
એ પ્રતીતિ સહુને કરાવ...

Snehal Sindhu Jan2024-V04 (kajal).indd 19 29-01-2024 18:24:29

RNI Regn No : MAHMUL/2015/62272
Date of publication: 8th of every month
POSTED AT MUMBAI PATRIKA CHANNEL SORTING OFFICE MUMBAI 400001

Postal Regn No: MCW/329/2018-20
Date of posting:11th of every month

Summary of Events

(1) Bhajan Sandhya and P.P. Dinkarbhai, P. Kishorbhai Masters and P. Angieben's Welcome on 7th December at Thane. (2) Special Mahapooja at Dombivali on 10th December. (3) Saint Brothers' Vicharan at Delhi, Hyderabad and Bangalore from 14th to 24th December. (4) Free eye check-up and distribution of Glasses to needy persons in surrounding villages of Karjat by P.P. Vashibhai and officials of Sadhbhav Foundation on 24th December. (5) P.P. Premswaroopswamiji's 79th Birthday Celebration at Haridham on 27th December. (6) Celebration of 223rd "Swaminarayan Mahamantra Pradan Din" (Invocation Day), P.P. Harakhchandbhai's 85th Birthday celebration and welcome of New Year 2024 with a Special Mahapooja, Dhun and Blessings at "Akshardham" Temple, Powai on 31st December. (7) P. Vignyanswamiji and P. Aksharswamiji at "Akshardham" Temple, Powai on 2nd January, 2024. (8) Article of Gunatit Saints Divine working on the occasion of P.P. Bharatbhai's 70th Pragatyadin. (9) Article by P. Dasswamiji for Guruhari Kakaji Maharaj on his 73rd Sakshatkar Din on 3rd February.

Space for address

Space for franking

Printed Matter - Book Post

From

YOGI DIVINE SOCIETY

6D Sonawala Building, Tardeo,
Mumbai - 400 007 Tel: 2380 2527

'Akshardham' Swaminarayan Temple,
Near Hiranandani Hospital, Powai, Mumbai - 400 076
Tel: 2578 2151/2579 4314 Email: isrc@kakaji.org

Printed & Published by Bharat P Mehta on behalf of Yogi Divine Society & Printed at Jalaram Enterprise, Fairy Manor, 13, Rustom Sidhwa Marg (Gunbow Street), Fort, Mumbai - 400 001 & Published by Yogi Divine Society, 6D, Sonavala Building, 4th Floor, Tardeo, Mumbai - 400 007.

Editor: Bharat P Mehta

Snehal Sindhu Jan2024-V04 (kajal).indd 20 29-01-2024 18:24:29